अब शिव जयन्ती पर शिव से मिलन मनायें

कालचक्र घूमता जाता है, केवल स्मृति रह जाती है। उसी स्मृति को पुनः ताजा करने के लिए यादगारें बनाई जाती हैं, कथायें लिखी जाती है, जन्म-दिवस मनाए जाते हैं, जिसमें श्रद्धा, प्रेम, स्नेह और सद्भावनाओं का मिश्रण होता है। परन्तु वह एक दिन भी आ जाता है जब श्रद्धा और स्नेह का अंत हो जाता है और रह जाती है केवल परम्परा। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि आज पर्व भी उसी परम्परा को निभाने मात्र मनाए जाते हैं। भारत वर्ष एक आध्यात्म प्रधान देश है और जितने पर्व भारत में मनाए जाते हैं शायद ही उतने पर्व अन्य किसी देश में मनाए जाते हो। समय प्रति समय ये त्यौहार उन्ही छिपी हुई आध्यात्मिकता की रश्मियों को जाग्रत करते हैं। शिवरात्रि भी उन विशिष्ट त्यौहारों में मुख्य स्थान रखता है।

आज गॉव-गॉव, शहर-शहर में शिव भक्त इस दिन व्रत रखते है, पूजन करते है तथा रात में जागरण भी करते है कि शिव प्रसन्न हो उनकी मनोकामनाएं पूर्ण करेंगे तथा उन्हे दर्शन देंगे। परन्तु शिवरात्रि ही क्यों....शिवरात्रि से क्या सम्बन्ध है। यहाँ रात्रि रोज होने वाले रात्रि नहीं, बल्कि जब इस सृष्टि पर सभी मनुष्यों के मन में अज्ञान का अंधकार छा जाता है उसे ब्रह्मा की रात्रि कहा जाता है और ज्ञान के सागर स्वयं आकर मनुष्यों को ज्ञान प्रकाश देते हैं, जिससे ब्रह्मा की रात ब्रह्मा के दिन में बदल जाती है। तो परमात्मा शिव ज्ञान प्रकाश लेकर अज्ञान की रात्रि में आते हैं इसलिए इस यादगार त्यौहार को शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं।

शिव स्वयं आते है इसलिए शिवरात्रि को शिव-जयन्ती भी कहते हैं। शिव और शंकर में अन्तर है। जयन्ती अर्थात् शिव जन्म नहीं लेते शिव तो निराकार है। वे जन्म-मरण से न्यारे है। और शंकर तो उनकी रचना सूक्ष्म शरीरधारी एक देवता है। शिव का तो इस धरा पर अवतरण होता है। वे दूसरे के तन का आधार लेते हैं। ज्ञान सागर सम्पूर्ण पावन सर्व शक्तिवान परमात्मा शिव किसे अपना माध्यम बनायेंगे? भक्तों ने तो शिव को नन्दीगण पर सवारी करते दर्शाया है। परन्तु निराकार को तो चाहिए कोई साकार तन और वह योग्य तन है प्रजापिता ब्रह्मा, जो सृष्टि के आदिकाल में स्वयं इष्टदेव श्रीकृष्ण थे। तो परमात्मा शिव परमधाम से इनके तन में अवतरित होते हैं। वे इनके द्वारा सम्पूर्ण सत्य ज्ञान देते है, जो अभी दे रहे हैं और अपना दिव्य कर्तव्य कर रहे हैं।

आज भी भक्त नींद का त्याग करके जागरण करते हैं। परन्तु परमात्मा शिव तो आकर सबको अज्ञान की नींद से जगाते हैं। वे ज्ञान-अमृत बॉटते है, जिस ज्ञानामृत से आत्मा अमर बन जाती है। अब स्वयं परमात्मा शिव हम सबको सदा के लिए अज्ञान नींद से जगा रहे है। वे कहते हैं - मेरे मीठे बच्चों स्वयं को पहचानों, मैं तुम्हारा परमपिता हूँ, मेरे पास आओ और मुक्ति-जीवन मुक्ति प्राप्त करो। अब ये समय शिव से मिलन मनाने का है। जिसको पूजने में ही इतना आनन्द मिलता हो, उसका मिलन कितना सुखदायी होगा? वह अवश्य मिलता है। यदि वह न मिलता हो तो भला उससे मिलन की इच्छा ही क्यों होती? आज लाखों ब्रह्मा वत्स उनसे मिलन का सुख प्राप्त कर वरदानों से अपनी झोली भरपूर कर रहे हैं। वे प्रेम का सागर भी है तो सुख के सागर भी हैं। वे सभी आत्माओं को सच्चा प्यार दे रहे हैं तथा सभी का दुःख हर रहे हैं।

इस पावन महान पर्व पर सभी मनुष्यों को विकारों से छुड़ाने के लिए, मनुष्यों को देवता बनाने के लिए शिव स्वयं इस धरा पर अवतरित होते हैं। सभी भक्तों को भक्ति का फल देने के लिए, मिलन मनाने के लिए स्वयं शिव आप सबका आह्वान कर रहे हैं ताकी सत्य ज्ञान से आप अपने मन के अन्धकार को दूर भगा सको।